बहुवचन

60

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

ज्ञान शांति मैत्री

जनवरी–मार्च 2019

बहुवचन
अंक : 60 (जनवरी-मार्च 2019) ISSN- 2348-4586
प्रकाशक : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)

संपादकीय संपर्क :
संपादक बहुवचन
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
गांधी हिल्स, पोस्ट- हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा- 442001 (महाराष्ट्र)
मो. संपादक- 7888048765, 09422386554, ईमेल- bahuvachan.wardha@gmail.com
E-mail : amishrafaiz@gmail.com

प्रकाशन प्रभारी : राजेश कुमार यादव
ईमेल- rajeshkumaryadav97@gmail.com फोन- 07152-232943, मो. 09975467897

© संबंधित लेखकों एवं रचनाकारों द्वारा सुरक्षित
प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक एवं विश्वविद्यालय की स्वीकृति आवश्यक है। प्रकाशित रचनाओं की रीति-नीति या विचारों से महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा या संपादकों की सहमति अनिवार्य नहीं है।

पत्रिका न मिलने की शिकायत इस पते पर करें :
प्रचार प्रसार : सुरेश कुमार यादव
फोन : 07152-232943, मो. 09730193094, ईमेल- s.ujala80@gmail.com

बिक्री और प्रसार कार्यालय :
प्रकाशन विभाग, **महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय**
गांधी हिल्स, पोस्ट- हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा- 442001 (महाराष्ट्र) भारत
फोन : 07152-232943, फैक्स : 07152-230903

वार्षिक सदस्यता के लिए बैंक ड्राफ्ट **महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय** के नाम से, जो वर्धा में देय हो, ऊपर लिखित बिक्री कार्यालय के पते पर भेजें। मनीऑर्डर स्वीकार्य नहीं।

यह अंक : रु. 200/-
सामान्य अंक : 75/- वार्षिक शुल्क रु. 300/-, द्विवार्षिक शुल्क रु. 600/- व्यक्तिगत
संस्थाओं के लिए वार्षिक शुल्क रु. 400/-, द्विवार्षिक रु. 800/- (डाक खर्च सहित)
विदेश में : हवाई डाक : एक प्रति 15 अमेरिकी डॉलर/7 ब्रिटिश पाउंड
समुद्री डाक : एक प्रति 8 डॉलर/5 ब्रिटिश पाउंड
आवरण : वेदप्रकाश भारद्वाज

BAHUVACHAN
A QUARTERLY INTERNATIONAL JOURNAL IN HINDI
PUBLISHED BY: MAHATMA GANDHIANTARRASHTRIYA HINDI VISHWAVIDYALAYA
GANDHI HILLS, POST-HINDI VISHWAVIDYALAYA, WARDHA-442001 (MAHARASHTRA) INDIA.

मुद्रण : क्विक ऑफसेट ई-17, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032 (फोन : 011-22824606, मो. 9811388579)

शंकरानंद 108
प्रांजल धर 111

कला

कला की गतिशीलता/प्रयाग शुक्ल 115

संवाद

'दलित-मुक्ति का सवाल आज भी संक्रमण के दौर से गुजर रहा है' 122
(देवेंद्र चौबे से इकरार अहमद-मीनाक्षी की बातचीत)

आलोचना

अँधेरे में छुपी रोशनी की तलाश (संदर्भ : और पसीना बहता रहा)/शंभु गुप्त 127
आत्मप्रकटीकरण की नई दिशाएं संभावनाएं/ कुबेर कुमावत 131
भारतीय मिथक और हिंदी गजल/ज्ञानप्रकाश विवेक 141
'ऐ लड़की' में कृष्णा सोबती की जीवन-दृष्टि/गरिमा श्रीवास्तव 153
असमिया कथा-साहित्य का तीन दशक: कतिपय वैशिष्ट्य/सूर्यकांत त्रिपाठी 164
भूदान की ज्ञान-मीमांसा/मिथिलेश कुमार 168

असमिया कथा-साहित्य का तीन दशक

सूर्यकांत त्रिपाठी

सन् 1940 से 1970 पर्यंत कुल तीन दशक की कथाओं के वैशिष्ट्य को प्रकाशित करने का प्रयास प्रस्तुत आलेख में किया गया है। इस काल को रामधेनु युग के नाम से डॉ. धर्मदेव तिवारी ने अपनी पुस्तक असमिया साहित्य में उद्धृत किया है।1 (तिवारी, डॉ. धर्मदेव, असमिया साहित्य, पृ. सं. 80)। असमिया साहित्य में रामधेनु युग की शुरुआत तकरीबन 1940 से मानी जाती है। द्वितीय महायुद्ध के पश्चात असम के जातीय जीवन में बहुशः बदलाव आया और सन् 1942 के स्वतंत्रता संग्राम के कारण असम का जन-जीवन आंदोलित हो उठा। इस प्रकार युद्ध का जो कुप्रभाव समाज पर पड़ा उससे असम का कथा-साहित्य भी अछूता न रहा और इस काल के कथाकारों ने अपने-अपने ढंग से समाज की विकृतियों पर दृष्टिपात करते हुए अपनी लेखनी चलाई। इस युग के कथाकारों में विशेष रूप से लक्ष्मीनाथ बरा, विनोद शर्मा, चित्रलता फूकन, होमेन बरगोहाई, सैयद अब्दुल मालिक, वीरेंद्र भट्टाचार्य, रिजु हजारिका, जमीरूद्दीन अहमद, रूनु बरूआ, यतीन बरा,चंद्रप्रकाश शइकीया, अनुपमा बरगोहाई, नीलिमा शर्मा, लक्ष्मीनाथ बेजबरूआ, महीचंद्र बरा, लक्ष्मीधर शर्मा, राधिका मोहन गोस्वामी, कृष्ण भुइयां, त्रैलोक्य नाथ गोस्वामी, सौरभ कुमार चालिहा, पद्‌म बरकटकी, महेंद्र बरठाकुर, राजेंद्रनाथ हजारिका, लक्ष्मीनंदन बरा, रूद्रप्रसाद काकती, रोहिणी कुमार काकती, निरूपमा बरगोहाई, मामनि रायसम गोस्वामी, प्रणीता बेबी, आरतिदास वैरागी, अनिमादत्त भराली, रत्न ओझा, स्नेह देवी प्रभृति उल्लेखनीय है। तद्‌युगीन कथा-साहित्य विशिष्टताओं को अधोलिखित सांचों में रखकर देखा और परखा जा सकता है-

सामाजिक परिवेश :

सामाजिक परिवेश को ध्यान में रखकर हर युग का साहित्यकार पुरानी रूढ़ियों, अंधविश्वासों को छोड़कर नई परिस्थितियों को अपनाता है। यथार्थवादी सभ्यता के प्रभाव से हमारा समाज किस प्रकार बदला है और उसका प्रतिफल वर्तमान और भविष्य पर क्या हो रहा है और क्या होगा को इंगित कर कथाकार लक्ष्मीनाथ बरा ने 'देवतार व्याधि' एवं 'गुरु पर्व' जैसी कहानियों के द्वारा प्रकट किया है। इसी प्रकार अपनी 'रूपांतर' तथा 'भेकुरीर पुंज' कहानियों के माध्यमों से विनोद शर्मा ने समाज में परिव्याप्त ऊंच-नीच, जाति-पांत जैसी बुराईयों पर प्रहार किया है। इस काल के कथाकारों में शोषितों के प्रति संवेदना, सहानुभूति और शोषकों के प्रति आक्रोश बखूबी देखा जा सकता है। चित्रलता फूकन, होमेन बरगोहाई आदि कथाकारों का नाम इस रूप में विशेष उल्लेखनीय है। इस

व्यंग्य यात्रा

सार्थक व्यंग्य की रचनात्मक त्रैमासिकी

वर्ष : 15 अंक : 58-59

संयुक्तांक

जनवरी-जून 2019

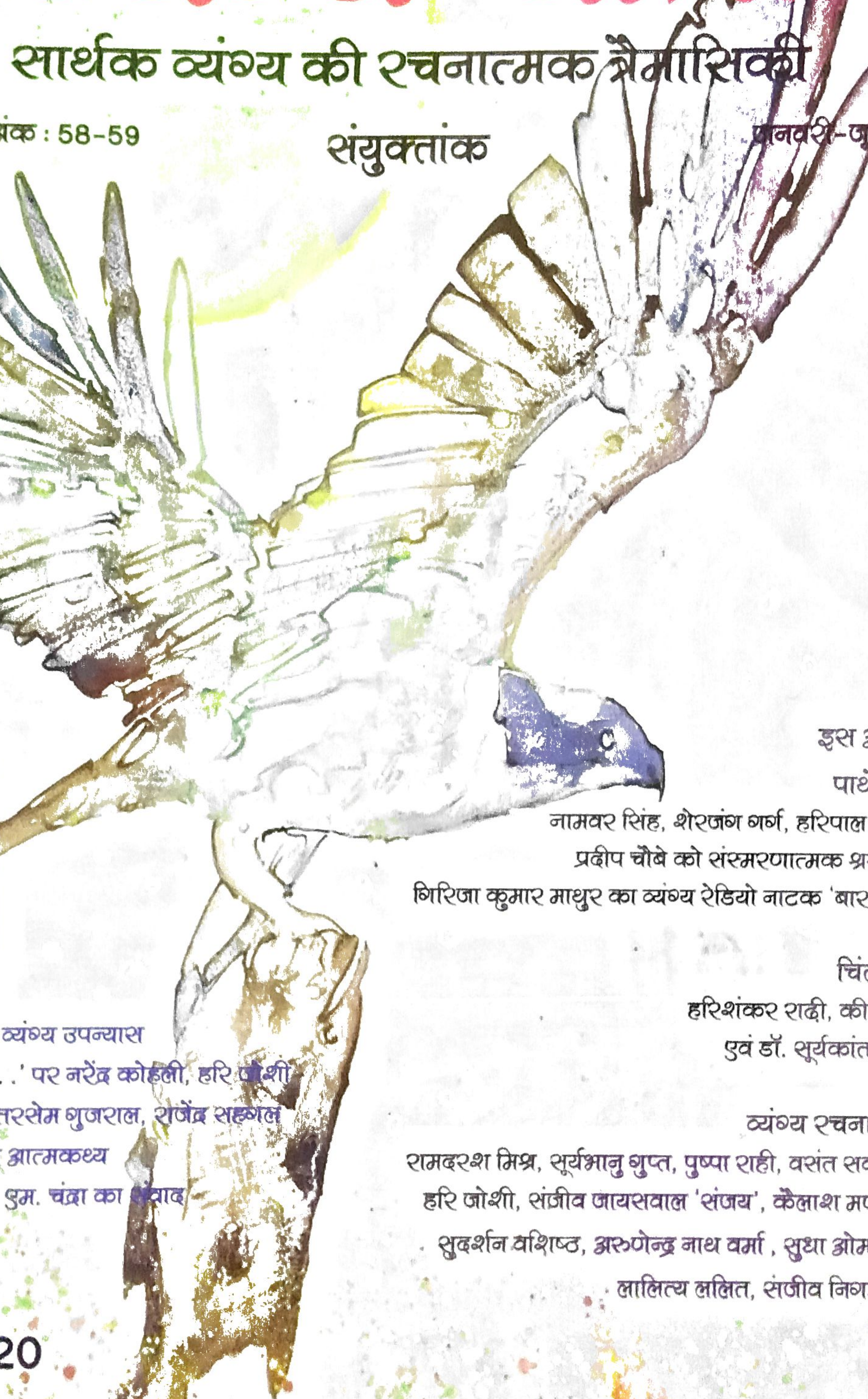

त्रिकोणीय में

सुरेश कांत के व्यंग्य उपन्यास
'जॉब बची सो. . .' पर नरेंद्र कोहली, हरि जोशी
प्रेम जनमेजय, तरसेम गुजराल, राजेंद्र सहगल
सुरेश कांत का आत्मकथ्य
और उनसे एम. एम. चंद्रा का संवाद

इस अंक में

पाथेय में-

नामवर सिंह, शेरजंग गर्ग, हरिपाल त्यागी,
प्रदीप चौबे को संस्मरणात्मक श्रद्धांजलि
गिरिजा कुमार माथुर का व्यंग्य रेडियो नाटक 'बारात चढ़े'

चिंतन में-

हरिशंकर राढ़ी, कीर्ति शर्मा
एवं डॉ. सूर्यकांत त्रिपाठी

व्यंग्य रचनाओं में-

रामदरश मिश्र, सूर्यभानु गुप्त, पुष्पा राही, वसंत सकरगाए,
हरि जोशी, संजीव जायसवाल 'संजय', कैलाश मण्डलेकर
सुदर्शन वशिष्ठ, अरुणेन्द्र नाथ वर्मा , सुधा ओम ढींगरा,
लालित्य ललित, संजीव निगम आदि।

मूल्य ₹ 20

व्यंग्य यात्रा

सार्थक व्यंग्य की रचनात्मक त्रैमासिकी

जनवरी-जून 2019 संयुक्तांक

वर्ष-15 अंक-58-59

एक अंक : 20 रुपए
पांच अंक : सौ रुपए
विदेशों में : 5 डॉलर प्रति अंक

सहयोग राशि 'व्यंग्य यात्रा' के नाम से ही भेजने का कष्ट करें। दिल्ली से बाहर के चेक पर बीस रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

'केन्द्रीय हिंदी संस्थान' आगरा से आर्थिक सहयोग प्राप्त।

संपादक

प्रेम जनमेजय

संपर्क

73, साक्षर अपार्टमेंट्स
ए-3 पश्चिम विहार
नई दिल्ली-110063
फोन : 011-470233944, 09811154440
ई-मेल :
vyangya@yahoo.com
premjanmejai@gmail.com

आवरण - मंजीत चात्रिक की कलाकृति पर आधारित
आवरण सज्जा- विपिन कुमार

प्रबंध सहयोग

रामविलास शास्त्री
4, शॉपिंग कॉम्प्लैक्स दयालबाग
सूरजकुंड, फरीदाबाद (हरियाणा)
मोबाइल : +91 9911077754

'व्यंग्य यात्रा' में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं। विवादास्पद मामले दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे। संपादन एवं संचालन पूर्णत: अवैतनिक और अव्यावसायिक।

अनुक्रम

आरंभ 1-3

चंदन घिसें 4-8

पाथेय 9-28

. . . नामवर सिंह द्वारा व्यंग्य चर्चा
व्यंग्य आमजन का सबसे बड़ा हथियार 9-11
राकेश अचल-
प्रदीप चौबे: एक कहकहे का अवसान 12
प्रेम जनमेजय-
शेरजंग गर्ग: मरने के प्रतिकूल जीने वाला 13-16
हीरालाल नागर-
व्यंग्य हरिपाल त्यागी के बोलचाल में था 16
गिरिजा कुमार माथुर- बारात चढ़े 17-26
निशा नाग-
माथुर जी के रेडियो नाटकों में निहित व्यंग्य 27-28

त्रिकोणीय 29-51

प्रेम जनमेजय 30
सुरेश कांत सुरेश कांत रचनाएं ही मुझे लिखती हैं 31-35
सुरेश कांत 'जॉब बची सो. . .' का एक अंश 36-38
नरेन्द्र कोहली विचित्र जंतुओं का धाकड़ शिकारी 39
हरि जोशी- लीक से हटकर 40
तरसेम गुजराल- . . .को बेनकाब करता उपन्यास 41-42
राजेन्द्र सहगल- कार्पोरेट जगत का मायाजाल 43-45
सुरेश कांत से एम.एम. चन्द्रा की बातचीत 46-51

चिंतन 52-58

हरिशंकर राढ़ी-
व्यंग्य की विषयवस्तु और मूल्य 52-54
कीर्ति शर्मा-
अभिव्यक्ति के सारे खतरे उठाने ही होंगे! 55-56
डॉ. सूर्यकांत त्रिपाठी पं. विद्यानिवास मिश्र के व्यंग्य-निबंधों में विशेषण-विधान 57-58

पद्य व्यंग्य 59-64

रामदरश मिश्र की प्रखर काव्याभिव्यक्तियां
अंडकोष, सत्यवादी, बल्ला और कलम. . . 59
सूर्यभानु गुप्त की गजलें और दोहे 60-61
पुष्पा राही, सुधेश, गीता पंडित 62
वसंत सकरगाए, दीप्ति मिश्रा 63
दरवेश भारती, आनंद वि आचार्य
दामिनी यादव, अतुल प्रभाकर 64

व्यंग्य रचनाएं 65-96

संजीव जायसवाल 'संजय'- यत्र-तत्र-सर्वत्र 65-69
हरि जोशी- वैश्विक लालू 70-72
सुधा ओम ढींगरा- नाच मेरे जमूरे कि. . . 73
भरतचंद्र शर्मा- मानहानि की कुत्ता फजीती लें 74
कैलाश मण्डलेकर- लोकगीतों पर शोध और. . . 75-76
रामजी प्रसाद 'भैरव'- चुगलखोरों के नाम पत्र 77
अरुणेन्द्र नाथ वर्मा- संस्कृति का बैताल. . . 78
रामविलास जांगिड़- शिक्षा चली अब पशुओं की ओर 79
ललित कुमार- हनुमान की जाति-
नेशनल रजिस्टर ऑफ गॉड्स 80
सुदर्शन वशिष्ठ- बेस्ट सैलर 81-82
दीपा अल्मोड़ा- वो सुख जो हम ले ना सके. . . 83
लालित्य ललित- पांडेय जी और इलेक्शन. . . 84-85
बजरंग सोनी- सोशल मीडिया- एक नया धर्म 86-87
अजय जोशी- मुझसे अच्छा न कोय. . . 88
सजीव निगम- भूखे के आगे कल्पना है 89
घनश्याम अग्रवाल- तेरा नाम क्या है 89
राजेशखर चौबे- फेक राईटर 90
हर्षवर्द्धन वर्मा- चुनाव 91
अलंकार रस्तोगी- 'सब कुछ मिल जाएगा' 92
रश्मि- 'जब नेता न मिले' 93
कमलेश भारतीय- स्मृति चिह्न 93
नीरज नीर- बंसत के बहाने 94
सुदर्शन कुमार सोनी- एक वोटर के हसीन सपने 95-96
रासबिहारी गौड़- पहले दांव, अब दावे 96

इधर जो पढ़ा 97-104

रमेश तिवारी- प्रामाणिक दस्तावेज है- अर्थागमन 97-98
पारुल सिंह- रोचकता की खूशबू से महकते पन्ने 99
सूर्यबाला- पचरतंत्र की कथाएं 100
उमाशंकर परमार- यह गांव बिकाऊ है. . . 100
सुधीर ओखद- जीभ अनशन पर हे 101
मधु आचार्य आशावादी- पांच कृतियां 101
मलय जैन- पड़ताल करता उपन्यास 'तन्त्र कथा' 102
कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकों की सूचना 103
शिवना प्रकाशन की नई पुस्तकें 104

समाचार 105-112

अब आप
आर.टी.जी.एस.
द्वारा
'व्यंग्य यात्रा'
को अपना
आर्थिक सहयोग दे सकते हैं।

खाताधारक का नाम : व्यंग्य यात्रा
बैंक का नाम : केनेरा बैंक
शाखा- पश्चिम विहार, ए-ब्लाक
खाता संख्या : 3223201000092
IFSC Code : CNRB0003223

वर्ष-15 पंजीयन संख्या : DELHIN/2004/15013 अंक-58-59

ISSN 2348-4209

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के कुछ महत्वपूर्ण प्रकाशन

नीरजा माधवः संकलित कहानियां

₹ 280.00 पृ. 250
ISBN 978-81-237-8160-0

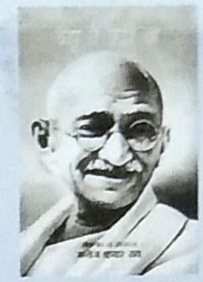

बापू ने कहा था

संकलन व संपादन : मनोज कुमार राय

₹ 240.00 पृ. 227
ISBN 978-81-237-8183-9

अशांत विश्व में भारत की सुरक्षा
जसजीत सिंह
अनुवाद : डॉ. परितोष मालवीय

₹ 190.00 पृ. 172
ISBN 978-81-237-8165-5

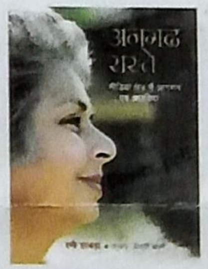

अनगढ़ रास्ते : मीडिया क्षेत्र में आगमन एवं अलविदा
रमी छाबड़ा
अनुवाद : दीपाली ब्राह्मी

₹ 705.00 पृ. 468
ISBN 978-81-237-8206-3

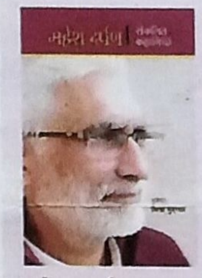

महेश दर्पणः संकलित कहानियां

₹ 255.00 पृ. 224
ISBN 978-81-237-8104-4

लोककला नवनीत
(लोककला विषयक निबंध-संग्रह)
संकलन व संपादन : डॉ. अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद'

₹ 240.00 पृ. 212
ISBN 978-81-237-8163-1

फन्नी ढाबा
अनुज त्यागी

₹ 120.00 पृ. 88
ISBN 978-81-237-8206-3

गंगा तीरे
अमरेंद्र कुमार राय

₹ 126.00 पृ. 150
ISBN 978-81-237-8164-8

पुस्तकों पर 10 प्रतिशत की छूट

आज ही खरीदें...

nbt.india

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की पुस्तकें यहाँ उपलब्ध हैं :
मुख्य कार्यालय
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 (भारत)
दूरभाप : 91-11-26707700 । फैक्स : 91-11-26707846 वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

नई दिल्ली । मुंबई । बेंगलुरु । कोलकाता । चेन्नै । हैदराबाद । गुवाहाटी । अगरतला । पटना । कटक । एर्णाकुलम

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ॰ प्रेम प्रकाश की ओर से सचदेवा प्रिंट आर्ट्स प्राइवेट लिमिटेड, 44, राजस्थानी उद्योगनगर, जी॰टी॰ करनाल रोड, दिल्ली-110033 द्वारा मुद्रित एवं 73, साक्षर अपार्टमेंट्स, ए-3, पश्चिम विहार, नई दिल्ली-110063 से प्रकाशित
संपादक : प्रेम जनमेजय

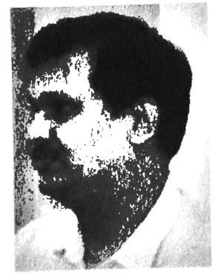

डॉ. सूर्यकांत त्रिपाठी

पं. विद्यानिवास मिश्र के व्यंग्य-निबंधों में विशेषण-विधान

श्रेष्ठ व्यंग्य प्रभावकारी तभी हो सकता है, जब उसमें शिष्टता, शालीनता एवं साहित्यिकता हो। 'शुगर कॉटेड पिल' की तरह व्यंग्य मधुवेष्ठित होना चाहिए। व्यंग्य में सपाटपन न होकर वक्रता होनी चाहिए। व्यंग्य जब सपाट होता है तो वह खुली निंदा या गाली-गलौज का रूप ले लेता है। प्रसिद्ध अंग्रेज व्यंग्यकार ड्राइडन ने श्रेष्ठ व्यंग्य को परिभाषित करते हुए लिखा है, 'किसी व्यक्ति के निर्ममता से टुकड़े-टुकड़े कर देने में तथा एक व्यक्ति के सर को सफाई से धड़ से अलग करके अलग लटका देने में बहुत अंतर है। एक सफल व्यंग्यकार अप्रस्तुत एवं प्रच्छन्न विधान की शैली में अपने भावों को व्यक्त कर देता है। वह क्रोध की अभिव्यक्ति आलंकारिक एवं सांकेतिक भाषा में करता है ताकि पाठक अपना स्वतंत्र निष्कर्ष निकाल सके। व्यंग्यकार अपने व्यक्तित्व को व्यंग्य से अलग कर लेता है ताकि व्यंग्य कल्पना के सहारे अपने स्वतंत्र रूप में कला एवं साहित्य के क्षेत्र में प्रवेश कर सके।' संक्षिप्तता के विषय में प्रो. गुडमैन का मत है, 'प्रभावकारी व्यंग्य तीर के समान होना चाहिए जो कि कम से कम समय में लक्ष्य को भेद दे। थोड़े में बहुत कह देना ही व्यंग्य का गुण है। विस्तार इसके प्रभाव को बंद कर देता है।' (प्रो. गुडमैन, क्यूसेंस ऑफ लिटरेरी एसेस, पृ.सं. 72)।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व आक्रोश, विनोद, अंध-विश्वास और रूढ़वादिता की अपेक्षा 1950 के बाद हुए राजनीतिक, सामाजिक तथा साहित्यिक क्रियाकलाप व्यंग्य लेखों में अधिक उग्र हुए है। पहले की अपेक्षा आज का व्यंग्य अधिक चुटीला और मार्मिक है साथ ही साहित्यकारों के पास अपना आक्रोश व्यक्त करने के लिए एक सशक्त और स्वंतत्र माध्यम भी। स्वतंत्रता के पूर्व देश की जनता ने जो सपने देखे थे, साकार नहीं हुए और स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद शासन और समाज का एक घिनौना रूप उभरकर सामने आया, जिसकी कल्पना भी जनता को न थी। नतीजतन समाज टूटा, परिवार टूटा और व्यक्ति भी टूटने के कगार पर आ पहुंचा। आदर्श और यर्थाथ की दीवारें टूटी, मानवीय मूल्यों के महल चरमराकर गिर पड़े, अत: व्यक्ति और समाज के बीच एक संघर्ष छिड़ गया, जिसकी प्रतिक्रिया साहित्य के क्षेत्र में व्यंग्य की तीव्रता में प्रकट हुई।

इस वैषम्यपूर्ण आधुनिकता की रिक्तता ने साहित्यकार को समाज के समस्त खोखलेपन को स्वीकारने को विवश कर दिया और वह बर्हिमुखी न रहकर अंर्तमुखी हो गया। इस प्रकार 1950 के बाद जो साहित्यकारों का स्वर मुखर हुआ वह व्यंग्य का संवादी बन गया। परिणामस्वरूप व्यंग्यकारों और व्यंग्य रचनाओं में वृद्धि हुई। अनुभूति की गहनता ने विनोद की बात ही मस्तिष्क में न आने दी और युगीन व्यंग्य सहज ही हास्य से बिछुड़ व्यंग्य की कोटि में आ गया और उत्तरोतर आत्मपरक तथा गहरा होता गया। पं. विद्यानिवास मिश्र के शब्दों में, 'इसीलिए इसे अपना सबसे बड़ा शत्रु अपना मसीहापन ही लगता है। वह अपनी अक्षमता को छिपाना नहीं चाहता, वह संघर्ष करने से नहीं भागता, संघर्ष की तो वह प्रक्रिया है पर संघर्ष की व्यर्थता को वह समझता है। इसीलिए उसका व्यंग्य आत्मपरक है, गहरा है।' (साहित्य की चेतना, पृ.सं.127. 128)। इस युग के व्यंग्य ने जीवन के विभिन्न संदर्भो को स्पर्श करने की कोशिश की है। जीवन-संघर्ष से प्रेरणा प्राप्त कर उत्तरोतर विकसित हुआ है और जीवन की विसंगतियों के थपेड़े से क्रमागत तीक्ष्णतर, तीव्रतर और बौद्धिक हुआ है।

साहित्यिक भाषा में कथन का चयन ऐसा सुगठित होता है कि उस जगह दूसरा प्रयोग करने से यथातथ्य अभिप्रेत अर्थ की अभिव्यंजना संभव नहीं हो पाती। रचनाकार अभिप्रेत अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए पूर्ण मनोयोग से विशेषणों का चयन एवं प्रयोग करता है। विशेषणों के अध्ययन से रचनाकार के अभिव्यक्ति-कौशल का परिचय प्राप्त होता है। विशेषण चाहे जिस

साहित्य कला परिषद्
एवं
'व्यंग्य यात्रा' का आयोजन
2 और 3 जून को
कुल्लू में दूसरा
राष्ट्रीय व्यंग्य महोत्सव
'व्यंग्य का मूल तत्व'
पर विमर्श एवं व्यंग्य रचना पाठ
राजस्थान, महाराष्ट्र, उत्तराखंड, बिहार, मध्यप्रदेश, जम्मू एवं कश्मीर, हरियाणा, पश्चिम बंगाल, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, आदि राज्यों के रचनाकार होंगे सम्मिलित।

रूप में हो (विशेष्य-विधेय, सादृश्य या असादृश्य) वर्णन का समर्थ माध्यम विशेषण ही है। भावना की तीव्रता के कारण विशेषण जब अलभ्य हो जाता है तब विशेषण रहित भाषा का प्रयोग प्राप्त होता है। विशेष्य जहां नहीं प्राप्त हो पाता वहां विशेषण का प्रयोग होता है। इसी प्रकार विशेषणों के प्रयोग, न्यूनाधिक प्रयोग, पुनर्वार प्रयोग और प्रयोग के कौशल को ध्यान में रखकर हम रचनाकार के मानसिक चिंतन की भावभूमि को स्पर्श करने में सक्षम होते हैं।

यद्यपि पं. विद्यानिवास मिश्र ने व्यंग्य विधा में कलम कम चलाई है तथापि उनके जो व्यंग्य निबंध उपलब्ध हैं, वे उच्चकोटि के हैं और तद्युगीन व्यंग्य लेखकों में सर्वाधिक तर्कपूर्ण, तीव्रतर एवं अभिनिवेशी हैं। उनके निबंध संग्रह 'आंगन का पंक्षी और बनजारा मन' (1962) के प्रभुत्व-ज्वर अस्पताल, सदा आनंद रहे यही द्वारे, ड्योढ़े दर्जे का खातिमा, डेरी बनाम खेती, नर

हिन्दी अनुशीलन

ISSN 2249-930X

भारतीय हिन्दी परिषद् प्रयाग

वर्ष - 61 जनवरी - जून 2019 अंक 1-2

13. बाणभट्ट की आत्मकथा : आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी 106
डॉ0 सरला पण्ड्या

14. उपन्यास सम्राट की कालजयी कृति 'गोदान' 110
डॉ0 विवेक शंकर

15. भारतीय नारीत्व के गौरव के चितेरे : वृंदावनलाल वर्मा 116
डॉ0 महीपाल सिंह

16. कालजयी कहानी कफन 121
डॉ0 सूर्यकांत त्रिपाठी

17. लोकजीवन के रंग में रँगा मैला आँचल 127
डॉ0 कमला चौधरी

18. रागदरबारी के विडंबनाग्रस्त समाज की व्यंग्यात्मक अभिव्यक्ति 133
प्रो0 शैलेन्द्र शर्मा

19. मानस के हंस के तुलसी 144
डॉ0 अमित कुमार भारती

20. हिन्दी काव्य की ऐतिहासिक ऊर्जा एवं रसदीप्ति 151
डॉ0 निर्मला अग्रवाल

21. कालजयी कृति : गांधी पंचशती 158
डॉ0 कृष्णगोपाल मिश्र

कालजयी कहानी 'कफ़न'

डॉ. सूर्यकान्त त्रिपाठी

साहित्यकार वस्तुपरकता के साथ विभिन्न सामाजिक कारकों का बखूबी बारीकी से जाँच–पड़ताल कर बेबाकी से उद्घाटन करता है। इस वस्तुपरकता का मूलाधार सामाजिक उन्नयन होता है, जबकि साहित्य का हितकर या अहितकर बनना साहित्यकार और सामाजिक व्यवस्था पर निर्भर करता है। आत्मा और आत्मानुभूति के साथ कला और कलानुभूति के नाम पर शताब्दियों से इस साहित्य की रचना हुई। उसमें वास्तविक और उपयोगी रचनाधर्मिता की दृष्टि में समय–समय पर अनिश्चितता की स्थिति भी बनी रही है। साहित्यकार में सामाजिक जीवन और व्यक्तिगत जीवन के अनुभव और प्रतिभा के साथ सामाजिक प्रतिबद्धता का होना भी जरूरी है तभी उससे कालजयी रचना की सृष्टि संभव हो पाती है।

हिन्दी में मुख्य रूप से कहानी, उपन्यास, नाटक और काव्य के क्षेत्र में जो कालजयी कृतियाँ उपलब्ध हैं उनमें 'उसने कहा था', 'कफ़न', 'आकाशदीप', 'पर्दा', 'शरणदाता', 'मलबे का मालिक', 'मेहमान', 'सज़ा', 'जार्ज पंचम की नाक' प्रभृति हिंदी की कालजयी कहानियाँ है। 'गोदान', 'चित्रलेखा', 'झूठा–सच', 'बूँद और समुद्र', 'सारा आकाश', 'राग दरबारी', 'मैला आँचल', 'महाभोज', 'आधा गाँव', तथा 'मुझे चाँद चाहिए' हिंदी के कालजयी उपन्यास हैं। 'ध्रुवस्वामिनी', 'सिंदूर की होली', 'मिस्टर अभिमन्यु' 'अंधा युग', 'आषाढ़ का एक दिन', 'आधे–अधूरे, 'एक और द्रोणाचार्य', 'नेफा' की एक शाम', एवं 'सूरज की अंतिम किरण से सूरज की पहली किरण तक' हिंदी के कालजयी नाटक हैं और 'पृथ्वीराज रासो', 'रामचरित मानस', 'सूरसागर', 'पद्मावत', 'शिवराज भूषण', 'कामायनी', 'साकेत', कुरूक्षेत्र', 'यामा', और 'संसद से सड़क तक' हिंदी की कालजयी काव्य–कृतियाँ हैं।

मुशी प्रेमचन्द भारत के शीर्षस्थ एवं कालजयी साहित्यकारों में से एक हैं। समूचे विश्व साहित्य में उनका नाम बड़े ही सम्मानपूर्वक लिया जाता है। उन्होंने गद्य साहित्य की हर विधा में अपनी लेखनी चलायी है किंतु एक सफल कहानीकार और उपन्यास लेखक के रूप में ही उन्हें विशेष ख्याति प्राप्त हो पायी है। प्रेमचंद को अपने जीवनकाल में ही उपन्यास सम्राट की उपाधि मिल गयी थी। उन्होंने अन्य साहित्यकारों के उलट उर्दू–हिंदी की मिली–जुली भाषा का एक नया रूप प्रस्तुत किया। जिसे आगे चलकर हिंदी का मानक रूप मान लिया गया। मात्र भाषा में ही नहीं उन्होंने अपनी रचनात्मकता में भी औरों की तुलना में अपना एक नया पैड़ा पकड़कर चलना शुरू किया। कथा के विषय, पात्र–सृष्टि, उद्देश्य और सरोकार में क्रांतिकारी बदलाव करके एक नये युग (प्रेमचंद युग) का सूत्रपात किया, जिसका कोई

ISSN : 2249–9318
Refereed Research Journal
UGC Approved Journal No: 41389

वर्ष-15 अंक-14 जुलाई-दिसम्बर, 2019

अनुसंधान

छायावाद विशेषांक

सम्पादक
डॉ. राजेश कुमार गर्ग

7. **छायावादी युग की 'मतवाली पत्रकारिता' और इलाहाबाद** 61
डॉ. धनंजय चोपड़ा
पाठ्यक्रम समन्वयक, सेन्टर ऑफ मीडिया स्टडीज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय
उत्तर प्रदेश

8. **छायावादी कविता में दलित चिंतन** 69
प्रो. संजय एल. मादार
प्रोफेसर, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, धारवाड
कर्नाटक

9. **भारत के सांस्कृतिक सूर्योदय का काव्य : निराला का तुलसीदास** 74
प्रो. नरेंद्र मिश्र
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर
राजस्थान

10. **निरुपमेय ''निरुपमा''** 85
प्रो. सूर्यकांत त्रिपाठी
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर
असम

11. **कामायनी में अभिव्यक्त समरसता** 90
प्रो. सुनील बाबूराव कुलकर्णी
भाषा अध्ययन प्रशाला, कवित्री बहिनाबाई चौधरी उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय, जलगांव
महाराष्ट्र

12. **छायावाद के आलोक में पन्त, पल्लव और प्रथम रश्मि** 96
प्रो. दीपेन्द्र सिंह जाडेजा
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बडोदरा
गुजरात

13. **महादेवी जी का काव्य और वेदना** 100
प्रो. हरीश कुमार शर्मा
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, राजीव गांधी विश्वविद्यालय, ईटानगर
अरुणाचल प्रदेश

निरुपमेय "निरुपमा"

प्रो. सूर्यकांत त्रिपाठी*

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' छायावाद के प्रमुख स्तम्भों में से एक है। उन्होंने हिन्दी साहित्य की प्रायः हर विधा पर सफलतापूर्वक लेखनी चलायी है। कवि तो वे हैं ही साथ ही छायावादी गद्य के अंतर्गत भी उनका विशिष्ट योगदान है। उनकी गद्य कृतियाँ अपेक्षाकृत साफगोई से प्रेरित हैं। आचार्य नलिन विलोचन शर्मा ने उनके संबंध में अपने विश्वास को प्रकट करते हुए लिखा है– "हमारी दृष्टि में यदि निराला जैसा कवि हिंदी में नहीं लिखता होता, तो हिन्दी राष्ट्रभाषा के सम्मानित पद की अधिकारिणी नहीं हो सकती थी। ....छायावाद के अभिमन्यु थे निराला, लेकिन इस अंतर के साथ कि चक्रव्यूह भेदन करने के बाद वे पराजित नहीं हुए। निराला जी जॉनसन की तरह कर्मठ और अध्यवसायी, लार्डवायरन से उद्भट प्रत्यालोचक, कीट्स और टैगोर की तरह सुकवि और टॉलस्टाय, ह्यूगो और शॉ की तरह निर्भीक उत्क्रांतिकारी औपन्यासिक हैं।"[1]

'निरुपमा' निराला के आदर्श–प्रधान श्रेष्ठ उपन्यासों में से एक है, किसी भी समाज अथवा राष्ट्र के शैक्षणिक स्तर की कमजोरी उसके भविष्यत् की हीनताओं में बदल कर विरोध और विषमता को बढ़ावा देती है। अंग्रेजों की निजी–स्वार्थ–शिक्षा के अंधानुसरण का क्या दुष्परिणाम हो रहा है। इसका अत्यंत मर्मस्पर्शी प्रत्यक्ष 'निरुपमा' में मिलता है। इसके निवेदन में स्वयं लेखक ने लिखा है– "दूसरे उन्नत समाज लेखक की जो सहायता करते हैं वह हिंदी के समाज से प्राप्त नहीं। इसलिए काल्पनिक सृष्टि करनी पड़ती है जैसे समाज की लेखक आशा करता है और जिसका होना संभव भी है अनभ्यस्त और स्वभाव संचालितों को वहाँ अस्वाभाविकता मिलती है पर वह है स्वाभाविक। साथ ही प्रचलित छोटे–छोटे चित्र सहारे के लिए रहते है, साधारणों की समझ में उतना ही आता है।"[2] इससे यह जाहिर है कि उपन्यासकार समाज का आदर्श प्रस्तुत करना चाहता है। इस निमित्त समाज के घृणित, कुत्सित अस्तित्व की कुरुपता और हीनता को देखना भी जरूरी है। इसीलिए निराला ने कथासूत्र का आरंभ वहाँ से किया है जहाँ से उन्नत समाज के आदर्श का अधिकार–वितरण होता है। यह स्थान है विश्वविद्यालय। जिससे शिक्षा ग्रहण करने के लिए कृष्णकुमार के माता–पिता की भाँति शिक्षाभिलाषी युवकों के माता–पिता बहुशः विपत्तियों को झेलते हुए सुविधा प्रदान करते हैं। किंतु जब हम विश्वविद्यालयों की ओर दृष्टि निक्षेप करते है, तो वहाँ लोक गुरुओं की जगह प्रांतवाद, जातिवाद और भाई–भतीजावाद के आधार पर अथवा चरित्रहीन एवं अयोग्य व्यक्तियों को सिद्धि होती दिखाई देती है। लखनऊ विश्वविद्यालय के राजनीति शास्त्र के लेक्चरर डॉ. भड़कंकड़ इसके उदाहरण हैं जो राजनीति शास्त्र की अपनी शिष्या निरुपमा के पास प्रेम–पत्र लिखते हैं, जिसे वह अपनी सहज सरलता के कारण छिपाती नहीं है और अपने मामा योगेश बाबू को देती है। इस वजह से उसकी शैक्षिक प्रगति अवरुद्ध हो जाती है।

---

* *प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, असम*